1 कुरिन्थियों अध्याय 4 और 5
रविवार, 15 सितम्बर 2019

अध्याय चार

तीसरे अध्याय में कुरिन्थियों की कलीसिया के सामने परमेश्वर के सेवकों के साथ कैसे संबंध रखना है, इस विषय पर निर्देश देने के बाद, चौथे अध्याय में पौलुस यह बताना जारी रखता है कि सच्ची मसीही सेवकाई क्या होती है और प्रभु अपने सेवकों का न्याय कैसे करेंगे।

हम अपने अध्ययन के लिए इस अध्याय को चार भागों में विभाजित करते हैं:
सेवक और भण्डारी (4:1–2)
परमेश्वर के सेवकों का न्याय और आदर (4:3-6)
प्रेरिताई की चुनौतियाँ (4:7–13)
एक आत्मिक पिता का हृदय (4:14–21)

सेवक और भण्डारी (4:1-6)

1 मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे।
2 फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो।

- **वचन 1:**

मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे।

सेवक—यूनानी शब्द *'हुपेरेतेस' (hupērетēs)*, जिसका अर्थ है एक अधीनस्थ सेवक जो एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में कार्य करता है। यह बड़े जहाज़ में नीचे बैठकर चप्पू चलाने वाले नाविक की तरह है, जो कप्तान के निर्देशों के अनुसार काम करता है। यह शब्द राजाओं के सहायकों, न्यायाधीशों के परिचारकों, और किसी भी कार्य में दूसरे की सहायता करने वाले व्यक्ति के लिए उपयोग किया जाता था। यह दिलचस्प है कि पौलुस ने *'दूलोस'* (*doulos*) शब्द का उपयोग नहीं किया, जिसका अर्थ 'गुलाम' होता है।

भण्डारी के लिए यूनानी शब्द *'ओइकोनोमोस' (oikonomos)* है, जिसका अर्थ है—घर या सम्पत्ति का वह प्रबंधक जिसे मालिक की ओर से पूरे घर की देखभाल की ज़िम्मेदारी दी गई हो।

पौलुस विश्वासियों को आमंत्रित करता है कि वे उन्हें (पौलुस, पतरस, अपुल्लोस) परमेश्वर के भेदों (प्रकट की गई बुद्धि) के सेवक और भण्डारी के रूप में देखें।

- **वचन 2:**

फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो।

वास्तव में हमसे यही अपेक्षा की जाती है कि हम उस परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य हों जिसने हमें बुलाया है। यही वह बात है जिसकी परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है और जिसके आधार पर वह हमारा न्याय करेगा।

हमें उस प्रतिभाओं के दृष्टांत की याद आती है जो यीशु ने सिखाया था। स्वामी ने दो सेवकों को "अच्छा और विश्वासयोग्य" कहकर पुरस्कृत किया। परमेश्वर विश्वासयोग्यता को पुरस्कृत करते हैं।

परमेश्वर के सेवकों का न्याय और आदर (4:3-6)

- **वचन 3-5:**

3 परन्तु मेरी दृष्टि में यह बहुत छोटी बात है कि तुम या मनुष्यों का कोई न्यायी मुझे परखे, वरन् मैं स्वयं अपने आप को नहीं परखता।
4 क्योंकि मेरा मन मुझे किसी बात में दोषी नहीं ठहराता, परन्तु इससे मैं निर्दोष नहीं ठहरता, क्योंकि मेरा परखनेवाला प्रभु है।
5 इसलिये जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करो: वही अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों के अभिप्रायों को प्रगट करेगा। तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी।

इस संदर्भ में पौलुस कहता है कि लोग या यहाँ तक कि कोई मानवीय न्यायालय मुझे कैसे परखेगी—इसकी मुझे चिंता नहीं है। वास्तव में, मैं स्वयं भी अपना मूल्यांकन नहीं कर रहा हूँ।

हालाँकि पौलुस अपने जीवन की जाँच करता है और सब कुछ स्पष्ट देखता है, फिर भी वह सारा न्याय स्वयं प्रभु पर छोड़ देता है।

इसलिए पौलुस विश्वासियों को निर्देश देता है कि तुम प्रभु को ही अपने सेवकों का न्याय करने दो। प्रभु हर बात को प्रकाश में लाएँगे और हृदय के विचारों (प्रेरणाओं) को प्रकट करेंगे, और हर एक को उसका प्रतिफल मिलेगा।

यह बहुत महत्वपूर्ण है। प्रभु हमारा न्याय हमारे हृदय की प्रेरणाओं के अनुसार करेंगे—न कि उस महत्व, आकार या प्रसिद्धि आदि के आधार पर जो हमने प्राप्त की है। बात यह नहीं है कि आपने कितने उपदेश दिए, बल्कि यह है कि आपने वे उपदेश "क्यों" दिए—जब आप उन्हें दे रहे थे, तब आपके हृदय की प्रेरणा क्या थी।

- **वचन 6:**

हे भाइयो, मैं ने इन बातों में तुम्हारे लिये अपनी और अपुल्लोस की चर्चा दृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिये कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना, और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना।

पौलुस बताता है कि उसने ये सब बातें अपने और अपुल्लोस के संदर्भ में इसलिए कही हैं ताकि कुरिन्थियों के विश्वासी बातों को सही और स्पष्ट रूप से समझ सकें। वो उन्हें आग्रह करता है कि वे एक सेवक का पक्ष लेकर दूसरे के विरुद्ध होकर विभाजन न करें।

(कन्टेम्परारी इंग्लिश वर्शन अंग्रेजी बाइबल) ...मैं चाहता हूँ कि तुम यह कहना बंद करो कि हम में से कोई एक दूसरे से बेहतर है।

(ईज़ी-टू-रीड वर्शन अंग्रेजी बाइबल) ...तब तुम एक व्यक्ति के बारे में घमंड नहीं करोगे और दूसरे की आलोचना नहीं करोगे।

(गुड न्यूज ट्रांस्लेशन अंग्रेजी बाइबल) ...तुम में से कोई भी एक व्यक्ति पर घमंड न करे और दूसरे को तुच्छ न समझे।

यह हमारे लिए, विश्वासियों के रूप में, एक महत्वपूर्ण शिक्षा है। हम परमेश्वर के सेवकों को सेवक और भण्डारी के रूप में पहचानते हैं। हम समझते हैं कि अंततः प्रभु स्वयं अपने सेवकों का न्याय करेंगे और उन्हें प्रतिफल देंगे। इसलिए हमें एक सेवक का पक्ष लेकर उसे दूसरे से ऊपर नहीं उठाना चाहिए।

प्रेरिताई की चुनौतियाँ (4:7-13)

7 क्योंकि तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है? और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया? और जब कि तू ने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है कि मानो नहीं पाया?
8 तुम तो तृप्त हो चुके, तुम धनी हो चुके, तुम ने हमारे बिना राज्य किया; परन्तु भला होता कि तुम राज्य करते कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते।
9 मेरी समझ में परमेश्वर ने हम प्रेरितों को सब के बाद उन लोगों के समान ठहराया है, जिनकी मृत्यु की आज्ञा हो चुकी हो; क्योंकि हम जगत और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिये एक तमाशा ठहरे हैं।
10 हम मसीह के लिये मूर्ख हैं, परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान हो; हम निर्बल हैं, परन्तु तुम बलवान हो। तुम आदर पाते हो, परन्तु हम निरादर होते हैं।
11 हम इस घड़ी तक भूखे प्यासे और नंगे हैं, और घूसे खाते हैं और मारे मारे फिरते हैं;
12 और अपने ही हाथों से काम करके परिश्रम करते हैं। लोग हमें बुरा कहते हैं, हम आशीष देते हैं; वे सताते हैं, हम सहते हैं।
13वे बदनाम करते हैं, हम विनती करते हैं। हम आज तक जगत का कूड़ा और सब वस्तुओं की खुरचन के समान ठहरे हैं।

- **वचन 7,8:**

पौलुस कुरिन्थियों के विश्वासियों को उनके गलत और विभाजनकारी व्यवहार के लिए डाँटता है, विशेषकर उस घमण्ड के लिए जिसके द्वारा वे अपने मनपसंद सेवकों को ऊँचा उठाते थे। वह उन्हें तीन प्रश्नों के द्वारा चुनौती देता है:

तुम्हें दूसरे से अलग कौन बनाता है?—इस संदर्भ में, एक सेवक के इर्द-गिर्द बने किसी समूह को दूसरे से श्रेष्ठ क्या बनाता है? वास्तव में कुछ भी नहीं। जैसा कि पौलुस ने तीसरे अध्याय में समझाया है, हम सब एक हैं।

तुम्हारे पास ऐसा क्या है जो तुम्हें मिला नहीं?—हर सेवक (पौलुस, अपुल्लोस, पतरस, आदि) और हर समूह जो किसी सेवक से अपनी पहचान जोड़ता है, अपने आप में किसी बात का घमंड नहीं कर सकता। जो कुछ हमारे पास है वह परमेश्वर से ही आया है। हमने केवल वही पाया है जो परमेश्वर ने हमें दिया है।

यदि तुम्हें वह मिला ही है, तो फिर ऐसा घमंड क्यों करते हो मानो वह तुम्हें मिला नहीं?—हम ऐसा क्यों दिखाते हैं मानो जो कुछ हमारे पास है वह हमारी अपनी उपलब्धियों या हमारे अपने प्रयासों से ही आया हो?

ये तीनों प्रश्न आज हमारे लिए भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमें समझना चाहिए कि भले ही परमेश्वर ने उन सेवकों के द्वारा हमारे जीवन में कार्य किया हो जिन्हें उसने हमारे पास भेजा, फिर भी इससे हम अन्य विश्वासियों से किसी भी प्रकार श्रेष्ठ नहीं बन जाते। जो कुछ हमारे पास है वह परमेश्वर से ही आया है, भले ही उसने हमारे जीवन में अलग-अलग लोगों का उपयोग किया हो।

आठवें पद में, पौलुस व्यंग्य का उपयोग करते हुए कुरिन्थियों के उस रवैये को डाँटता है—वे सोचते थे कि वे पूर्ण हैं, धनी हैं, और राजाओं की तरह राज्य कर रहे हैं, और उन्हें पौलुस या प्रेरितों की कोई आवश्यकता नहीं है। पौलुस कहता है, "काश तुम सचमुच राज्य कर रहे होते, तब हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते।"

- **वचन 9-13:**

9 मेरी समझ में परमेश्वर ने हम प्रेरितों को सब के बाद उन लोगों के समान ठहराया है, जिनकी मृत्यु की आज्ञा हो चुकी हो; क्योंकि हम जगत और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिये एक तमाशा ठहरे हैं।
10 हम मसीह के लिये मूर्ख हैं, परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान हो; हम निर्बल हैं, परन्तु तुम बलवान हो। तुम आदर पाते हो, परन्तु हम निरादर होते हैं।
11 हम इस घड़ी तक भूखे प्यासे और नंगे हैं, और घूसे खाते हैं और मारे मारे फिरते हैं;
12 और अपने ही हाथों से काम करके परिश्रम करते हैं। लोग हमें बुरा कहते हैं, हम आशीष देते हैं; वे सताते हैं, हम सहते हैं।
13वे बदनाम करते हैं, हम विनती करते हैं। हम आज तक जगत का कूड़ा और सब वस्तुओं की खुरचन के समान ठहरे हैं।

पौलुस यहाँ उन कठिनाइयों और चुनौतियों का वर्णन करता है जिनसे प्रेरितों को गुजरना पड़ा, ताकि वे उन लोगों के जीवनों को समृद्ध कर सकें जिनकी वे सेवा कर रहे थे।

यह हमें मसीही सेवकाई का दूसरा पक्ष समझने में सहायता करता है। हमें लोगों की सेवा करने में बलिदान देने, चुनौतियों से गुज़रने और कठिनाइयों को सहने के लिये तैयार रहना चाहिए, ताकि वे समृद्ध और सुदृढ़ बन सकें। आज हम जिन कठिनाइयों का सामना करते हैं, वे उन कठिनाइयों की तुलना में कुछ भी नहीं हैं, जिनसे प्रेरितों को प्रभु यीशु मसीह की सेवा करते समय गुज़रना पड़ा।

एक आत्मिक पिता का हृदय (4:14-21)

14 मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये ये बातें नहीं लिखता, परन्तु अपने प्रिय बालक जानकर तुम्हें चिताता हूँ।
15 क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे सिखानेवाले दस हज़ार भी होते, तौभी तुम्हारे पिता बहुत से नहीं; इसलिये कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हुआ।
16 इसलिये मैं तुम से विनती करता हूँ कि मेरी सी चाल चलो।
17 इसलिये मैं ने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूँ।
18 कुछ तो ऐसे फूल गए हैं, मानो मैं तुम्हारे पास आने ही का नहीं।

[19] परन्तु प्रभु ने चाहा तो मैं तुम्हारे पास शीघ्र ही आऊँगा, और उन फूले हुओं की बातों को नहीं, परन्तु उनकी सामर्थ्य को जान लूँगा।
[20] क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं परन्तु सामर्थ्य में है।
[21] तुम क्या चाहते हो? क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊँ, या प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ?

पौलुस यहाँ अपने हृदय को एक सच्चे आत्मिक पिता के रूप में प्रकट करता है और कोरिन्थियों को अपने "प्रिय बालक" कहकर संबोधित करता है। वह उन्हें अपने "प्रिय बालक" इसलिए कह सकता है, क्योंकि परमेश्वर ने पौलुस का उपयोग करके उन्हें विश्वास में लाया और, कहें तो, सुसमाचार के द्वारा उन्हें परमेश्वर के राज्य में "जन्म दिया"।

इस खण्ड से हमें यह समझ प्राप्त होती है कि एक सच्चा आत्मिक पिता (या आत्मिक माता) होना क्या होता है:

1) एक आत्मिक पिता वह है जो न केवल सुसमाचार के द्वारा लोगों को राज्य में जन्म देता है, बल्कि उन्हें अपरिपक्वता से परिपक्वता की ओर भी ले जाता है। इसमें गलत चाल-चलन या गलत प्रेरणाओं के समय चेतावनी और सुधार देना भी शामिल है (वचन 14-15)।

2) एक आत्मिक पिता यह पहचानता है और अनुमति देता है कि उसके आत्मिक पुत्र-पुत्रियाँ अन्य सच्चे परमेश्वर के सेवकों के द्वारा भी शिक्षा, पालन-पोषण, प्रशिक्षण और सुसज्जित किए जाएँ (वचन 15)।

3) एक आत्मिक पिता स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करता है और अपने आत्मिक पुत्र-पुत्रियों को उसे अनुकरण करने के लिए बुलाता है (वचन 16)।

4) एक आत्मिक पिता ऐसे पुत्र-पुत्रियाँ तैयार करता है जो उन सब बातों को आगे ले जा सकें जो उन्होंने पाई हैं, जैसे तीमुथियुस ने किया (वचन 17)।

5) एक आत्मिक पिता यह जानता है कि कब प्रेमपूर्ण सुधार के लिये छड़ी का प्रयोग करना है, और कब अपने आत्मिक पुत्र-पुत्रियों के साथ प्रेम और नम्रता से व्यवहार करना है (वचन 21)।

प्रेरित पौलुस यह स्पष्ट करता है कि वह फिर से कुरिन्थियों आने के लिए इच्छा रखता है—शब्दों के साथ नहीं, बल्कि राज्य के उस सामर्थ्य के साथ, जिसमें वह स्वयं चलता और सेवा करता था। फिर भी वह यह निर्णय कोरिन्थियों के विश्वासियों पर छोड़ देता है, कि वह उनके पास सुधार के लिये छड़ी लेकर आए, या दयालुता के साथ।

अध्याय पाँच

अब प्रेरित पौलुस उस दूसरे गंभीर विषय पर बात करना आरम्भ करता है, जो कुरिन्थियों की कलीसिया को परेशान कर रहा था। कलीसिया के भीतर यौन पाप पाया जा रहा था। यद्यपि पूरा अध्याय इसी विषय से सम्बन्धित है, फिर भी हमारे अध्ययन के उद्देश्य से हम इस अध्याय को तीन भागों में विभाजित करते हैं:

स्थानीय कलीसिया में पाप के विरुद्ध कार्यवाही (5:1-5)
अखमीरी रोटी और फसह का मेम्ना (5:6-8)
जानबूझकर पाप में रहने वालों के साथ व्यवहार (5:9-13)

इसके बाद हम परमेश्वर के अनुग्रह से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछते हैं: अनुग्रह का क्या?

स्थानीय कलीसिया में पाप के विरुद्ध कार्यवाही (5:1-5)

1 यहाँ तक सुनने में आता है कि तुम में व्यभिचार होता है, वरन् ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है।
2 और तुम शोक तो नहीं करते, जिससे ऐसा काम करनेवाला तुम्हारे बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड करते हो।
3 मैं तो शरीर के भाव से दूर था, परन्तु आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर मानो उपस्थिति की दशा में ऐसे काम करनेवाले के विषय में यह आज्ञा दे चुका हूँ
4 कि जब तुम और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ्य के साथ इकट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य हमारे प्रभु यीशु के नाम से
5 शरीर के विनाश के लिये शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए।

- **वचन 1:**

यहाँ तक सुनने में आता है कि तुम में व्यभिचार होता है, वरन् ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है।

यहाँ "यौन अनैतिकता" के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द *'पोर्निया'* (*porneia*) है, जिसका अर्थ है — विवाह के बाहर होने वाले सभी प्रकार के यौन सम्बन्ध, जिनमें समलैंगिकता, स्त्री-सम्बन्ध *(लेस्बियनिसम lesbianism)* आदि सहित हर प्रकार की यौन अशुद्धता शामिल है।

यहाँ प्रयुक्त शब्द "रखता है" यह दर्शाता है कि उस पुरुष और उस स्त्री के बीच लगातार चलने वाला सम्बन्ध था।

कुरिन्थियों के वे मसीही जो यहूदी पवित्रशास्त्र से परिचित थे, यह भली-भाँति जानते थे कि ऐसा यौन आचरण परमेश्वर द्वारा स्वीकार्य नहीं है (लैव्यव्यवस्था 18:8; व्यवस्थाविवरण 22:30; व्यवस्थाविवरण 27:20)। यहाँ तक कि संसार के लोग भी इस प्रकार के आचरण को स्वीकार नहीं करते थे।

- **वचन 2:**

और तुम शोक तो नहीं करते, जिससे ऐसा काम करनेवाला तुम्हारे बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड करते हो।

किसी कारण से कुरिन्थियों के मसीही इस पाप के प्रति उदासीन और लापरवाह बने हुए थे।

कुरिन्थियों के मसीही इस व्यक्ति के पाप के प्रति अपनी तथाकथित "सहनशीलता" पर घमण्ड कर रहे थे। यहाँ "फूल गए" के लिए यूनानी शब्द *'फुसिओओ' (phusioō)* प्रयुक्त है, जिसका अर्थ है—

अहंकारी, घमण्डी, आत्म-उन्नत होना। पौलुस ने इस घमण्डपूर्ण सहनशीलता के कारण उन्हें कठोरता से डाँटा।

उन्हें इस पाप के कारण गहरे दुःख में होना चाहिए था (शोक करना चाहिए था) और ऐसी कार्यवाही करनी चाहिए थी कि इस प्रकार के आचरण में रहने वाला व्यक्ति स्थानीय कलीसिया से अलग किया जाता। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया।

- **वचन 3-5:**

3 मैं तो शरीर के भाव से दूर था, परन्तु आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर मानो उपस्थिति की दशा में ऐसे काम करनेवाले के विषय में यह आज्ञा दे चुका हूँ
4 कि जब तुम और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ्य के साथ इकट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य हमारे प्रभु यीशु के नाम से
5 शरीर के विनाश के लिये शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए।

प्रेरित पौलुस यह पहचानता है कि प्रभु ने उसे कुरिन्थियों की कलीसिया पर आत्मिक अधिकार दिया है (2 कुरिन्थियों 10:8; 2 कुरिन्थियों 13:10), और उसी अधिकार के आधार पर वह इस विषय को संभाल रहा है।

2 कुरिन्थियों 10:8
क्योंकि यदि मैं उस अधिकार के विषय में और भी घमण्ड दिखाऊँ, जो प्रभु ने तुम्हारे बिगाड़ने के लिये नहीं पर बनाने के लिये हमें दिया है, तो लज्जित न हूँगा।

2 कुरिन्थियों 13:10
इस कारण मैं तुम्हारे पीठ पीछे ये बातें लिखता हूँ, कि उपस्थित होकर मुझे उस अधिकार के अनुसार जिसे प्रभु ने बिगाड़ने के लिये नहीं पर बनाने के लिये मुझे दिया है, कड़ाई से कुछ करना न पड़े।

प्रेरित पौलुस ने उस मनुष्य का न्याय किया (दोषी ठहराया, दण्ड ठहराया, निर्णय सुनाया) जो इस पाप में जीवन बिता रहा था, यद्यपि वह शारीरिक रूप से कुरिन्थ में उपस्थित नहीं था। उसने यह कार्य *"प्रभु यीशु मसीह के नाम में"* किया, अर्थात कलीसिया के सिर, यीशु मसीह की ओर से प्राप्त अधिकार में और उनकी ओर से कार्य करते हुए। उसने यह ऐसे किया मानो वह आत्मा में उपस्थित हो, जब कलीसिया प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य के साथ एकत्र हुई थी (यूनानी *'दूनामिस' (dunamis)*—अर्थात चमत्कारी सामर्थ्य)।

यहाँ एक महत्वपूर्ण पक्ष-टिप्पणी है। पौलुस बताता है कि जब स्थानीय कलीसिया प्रभु यीशु मसीह के नाम में एकत्र होती है, तो प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य उनके बीच उपस्थित होती है। यह बात आज भी सत्य है, जब हम यीशु मसीह के नाम में एकत्र होते हैं। हमें यह अपेक्षा रखनी चाहिए कि जब भी हम एकत्र हों, प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य प्रकट और प्रदर्शित होगी (संख्या चाहे जितनी भी हो)।

उस मनुष्य के लिए पौलुस का दण्ड क्या था? पौलुस ने उसे शैतान के हाथ सौंप दिया (समर्पित करना, सौंप देना, डाल देना, हवाले कर देना, उसके अधिकार में दे देना), ताकि शरीर का नाश हो, लेकिन उसकी आत्मा उद्धार पाए।

"ऐसे मनुष्य को शैतान के हाथ सौंपने" का क्या अर्थ है?

इसका अर्थ यह है कि जो व्यक्ति पाप में जीवन बिता रहा है, उसे स्थानीय कलीसिया की संगति और आत्मिक सुरक्षा से बाहर कर दिया जाता है। अपने पाप और विद्रोह (मन फिराने की अनिच्छा) के कारण वह अब इस स्थिति में आ जाता है कि शैतान उसके जीवन में कैसे कार्य करेगा, उसके प्रति वह असुरक्षित हो जाता है। अन्तिम उद्देश्य उसके शरीर का नाश (नाश होना, दण्डित होना) है, ताकि वह मन फिराव की ओर आए और उसका उद्धार हो।

नये नियम में 'शरीर' के लिए यूनानी शब्द *'सार्क्स'* (sarx) विभिन्न प्रकार से प्रयोग हुआ है। इसका उपयोग निम्नलिखित अर्थों के लिए किया गया है:

(A) सामान्य रूप से सभी लोग—प्रेरितों के काम 2:17; लूका 3:6;
(B) भौतिक शरीर—लूका 24:39; यूहन्ना 1:13,14;
(C) जो प्राकृतिक, सांसारिक, मानवीय है—जैसे मत्ती 16:17; रोमियों 9:3,5,8; 1 कुरिन्थियों 1:26; 1 कुरिन्थियों 7:28;
(D) भोजन, जीवन और पोषण के स्रोत के रूप में—जैसे यूहन्ना 6:51-55; 1 कुरिन्थियों 8:13 में;
(E) पापमय, शारीरिक लालसाएँ, वासनाएँ और इच्छाएँ—जैसा कि रोमियों 8, गलातियों 5 और अन्य स्थानों में बताया गया है।

उदाहरण के लिए, आगे चलकर 1 कुरिन्थियों 7:28 में पौलुस कहता है कि विवाह करने वालों को *"शरीर में क्लेश"* होगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्हें शरीर में कोई बीमारी या रोग होगा। वह प्राकृतिक, सांसारिक, दैनिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों और चुनौतियों की बात कर रहा है।

तो फिर, जब पौलुस ने उस व्यक्ति को शैतान के हाथ सौंपने के द्वारा *"शरीर के नाश"* की बात की, तो उसका क्या अभिप्राय था? इसका अर्थ यह था कि उस व्यक्ति को स्थानीय कलीसिया की आत्मिक सुरक्षा से बाहर कर दिया गया, और यह उसकी अपनी ही निरन्तर और बिना मन फिराए हुए पापमय जीवन-शैली के कारण हुआ। इस स्थिति में वह व्यक्ति अपने प्राकृतिक, सांसारिक, मानवीय जीवन में शैतान द्वारा की जाने वाली बुराइयों के प्रति असुरक्षित हो गया। यहाँ यह नहीं बताया गया है कि वह बुराई या कठिनाई क्या होगी। इस बात को ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है कि यह दण्ड किसी पर बुराई थोपना नहीं था, बल्कि उस व्यक्ति के ऊपर से आत्मिक सुरक्षा को हटा लेना था। अन्तिम और सर्वोच्च आशा यही थी कि वह व्यक्ति मन फिराए (पश्चाताप करे)।

हर प्रकार का मसीही अनुशासन इस उद्देश्य से किया जाना चाहिए कि मन फिराव, पुनर्स्थापन और आत्मिक उन्नति (edification-एडिफिकेशन) हो।

पक्ष-टिप्पणी: प्रेरित पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया में दो अन्य व्यक्तियों—हुमेनियुस और सिकन्दर—के साथ भी इसी प्रकार व्यवहार किया था। हुमेनियुस वह व्यक्ति था जो विश्वास से भटक गया और अपने विश्वास का जहाज़ तोड़ बैठा। वह निन्दक (1 तीमुथियुस 1:19,20) और झूठा शिक्षक बन गया, जिसने दूसरों के विश्वास को भी उलट-पलट दिया (2 तीमुथियुस 2:16-18)। सिकन्दर भी ऐसा ही एक व्यक्ति था, जो विश्वास से गिर पड़ा और अपने विश्वास का जहाज़ तोड़ बैठा (1 तीमुथियुस 1:19,20), और बाद में सुसमाचार का विरोधी बन गया (2 तीमुथियुस 4:14,15; प्रेरितों के काम 19:33)। ये दोनों ही व्यक्ति एक समय पर अच्छे विवेक के साथ विश्वास में चल रहे थे, परन्तु बाद में उन्होंने अपने विश्वास का जहाज़ तोड़ दिया। पौलुस ने इन दोनों को भी शैतान के हाथ सौंप दिया, *"ताकि वे यह सीखें की निन्दा नहीं करनी चाहिए"* (1 तीमुथियुस 1:20)। इस घटना से यह समझ प्राप्त होती है कि जब ऐसे लोगों को शैतान के हाथ सौंपा जाता है, तो वे ऐसी परिस्थितियों और अनुभवों से गुजरते हैं जो उन्हें यह समझने में सहायता करते हैं कि उन्हें यीशु मसीह और उसके सेवकों के विरोध में बोलना नहीं चाहिए।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि हमारे पास ऐसा कोई अभिलेख नहीं है कि पौलुस ने अपनी स्थापित की हुई कलीसियाओं में हर एक पाप करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध इस प्रकार का न्याय किया हो। शास्त्र में केवल दो ही घटनाएँ दर्ज हैं जहाँ पौलुस ने इस प्रकार की कार्यवाही का उल्लेख किया है।

साइड नोट: स्थानीय कलीसिया के प्रति एक मसीही का दृष्टिकोण

हम यहाँ नए नियम के समय में देखते हैं कि स्थानीय कलीसिया का हिस्सा होना वास्तव में एक विशेषाधिकार माना जाता था और यह आत्मिक सुरक्षा का स्थान था। याद रखें, कुरिन्थियों की कलीसिया परिपूर्ण नहीं थी। पहली और दूसरी कुरिन्थियों की पुस्तक में हम देखते हैं कि पौलुस कुरिन्थियों की कलीसिया में मौजूद अनेक समस्याओं को संबोधित करता है। फिर भी, यह अपूर्ण कलीसिया, क्योंकि यह मसीह की देह थी, आत्मा का मंदिर थी, और परमेश्वर का निवास स्थान थी, इसलिए जो लोग प्रभु और उसकी देह के साथ सही संबंध में थे, उनके लिए यह एक सुरक्षित स्थान था। स्थानीय कलीसिया के प्रति हमारा नज़रिया कैसा है?

कोई व्यक्ति स्थानीय कलीसिया में रहते हुए भी पाप और विद्रोह में बना रहकर यह अपेक्षा नहीं कर सकता कि उसे सुरक्षा मिलेगी।

जब आप प्रभु के साथ सही संबंध में होते हैं और उसके लोगों (स्थानीय कलीसिया) के साथ भी सही संबंध में होते हैं, तब आप आत्मिक सुरक्षा और आत्मिक संगति के उस स्थान में होते हैं, जो प्रभु से आती है और उसकी देह के द्वारा प्राप्त होती है।

अखमीरी रोटी और फसह का मेम्ना (5:6-8)

[6] तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं; क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा खमीर पूरे गूँधे हुए आटे को खमीर कर देता है।
[7] पुराना खमीर निकाल कर अपने आप को शुद्ध करो कि नया गूँधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अखमीरी हो। क्योंकि हमारा भी फसह, जो मसीह है, बलिदान हुआ है।
[8] इसलिये आओ, हम उत्सव में आनन्द मनावें, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से।

- **वचन 6:**

तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं; क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा खमीर पूरे गूँधे हुए आटे को खमीर कर देता है।

पौलुस यहाँ उनके घमण्ड के लिए उन्हें डाँटता है। उनका घमण्ड उन परमेश्वर के सेवकों के विषय में था जिनके साथ वे अपने आप को जोड़ते थे (पौलुस, पतरस, अपुल्लोस)। यह घमण्ड इस बात का भी हो सकता है कि आत्मा के वरदानों के द्वारा परमेश्वर उनके बीच कैसे कार्य कर रहा था।

पौलुस उन्हें एक ऐसी कहावत की ओर ध्यान दिलाता है जिससे वे परिचित थे: *"थोड़ा सा खमीर सारे आटे को खमीरा कर देता है।"* (ईज़ी-टू-रीड वर्शन अंग्रेजी बाइबल) यहाँ अभिप्राय यह है कि यदि वे इस पाप को अपने बीच सहन करते रहे, तो पूरी कलीसिया यौन अशुद्धता जैसे पापों से प्रभावित हो सकती है। इसी कारण ऐसे विषय से निपटने में तत्कालता और गंभीरता आवश्यक है।

- **वचन 7,8:**

7 पुराना खमीर निकाल कर अपने आप को शुद्ध करो कि नया गूँधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अखमीरी हो। क्योंकि हमारा भी फसह, जो मसीह है, बलिदान हुआ है।
8 इसलिये आओ, हम उत्सव में आनन्द मनावें, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से।

प्रेरित पौलुस अब पुराने नियम के फसह के पर्व (निर्गमन 12:1-14, 43-48; लैव्यव्यवस्था 23:4,5) और अखमीरी रोटी के पर्व (निर्गमन 12:15-20, 34, 39; निर्गमन 13:3-7; लैव्यव्यवस्था 23:6-8) से शिक्षा लेता है। फसह का पर्व पहले महीने के चौदहवें दिन, अर्थात इब्रानी महीने निसान में मनाया जाता था। फसह के दिन, अर्थात चौदहवें दिन, खमीरी रोटी नहीं खाई जाती थी। इसके बाद अगले सात दिनों तक—पन्द्रहवें दिन से लेकर इक्कीसवें दिन तक—अखमीरी रोटी का पर्व मनाया जाता था। इस प्रकार फसह के पर्व से पहले, सारा खमीर (खमीरी रोटी) घर से निकाल दिया जाता था। इन दोनों पर्वों की तैयारी के लिए पूरा घर भली-भाँति साफ किया जाता था। इब्रानी/यहूदी लोगों के लिए यह उनकी मिस्र की दासता और उत्पीड़न के पुराने जीवन से अलग होने का प्रतीक था।

नये नियम में हम देखते हैं कि खमीर (यीस्ट-yeast) पाप का प्रतीक है (2 कुरिन्थियों 5:6-8) और झूठे उपदेशों का भी (मत्ती 13:33; मत्ती 16:6-12; गलातियों 5:9)

- **वचन 7:**

पुराना खमीर निकाल कर अपने आप को शुद्ध करो कि नया गूँधा हुआ आटा बन जाओ,...

यहाँ प्रेरित पौलुस फसह और अखमीरी रोटी के पर्व से पहले होने वाली शुद्धिकरण की प्रक्रिया की ओर संकेत करता है, और कुरिन्थियों की कलीसिया से आग्रह करता है कि वे अपने बीच से पाप को निकाल दें, ताकि वे बिना खमीर का नया आटा बन सकें।

... तुम अखमीरी हो...

यह बताता है कि हम वास्तव में विश्वासियों के रूप में कौन हैं। हम "अखमीरी" हैं — अर्थात पाप से अलग किए गए। यह वही स्थिति है जो परमेश्वर ने हमें दी है, क्योंकि हम नये जन्म पाए हुए हैं। पौलुस कुरिन्थियों के विश्वासियों को बुलाता है कि वे उसी सच्चाई में जीवन व्यतीत करें, जिसमें परमेश्वर ने उन्हें रहने के लिये बनाया है।

... क्योंकि हमारा भी फसह, जो मसीह है, बलिदान हुआ है।

पौलुस यहाँ मसीह को हमारा फसह का मेम्ना बताता है। वह फसह के पर्व की सच्ची और पूर्ण पूर्ति है। उसका लहू और उसका बलिदान वास्तव में वही कार्य करता है, जिसका प्रतीक पुराने नियम का फसह का मेम्ना था। फसह का मेम्ना बलि किया जा चुका है, इसलिए अब हमें, कहें तो, अखमीरी रोटी का पर्व मनाते रहना है, अर्थात अपने जीवन से सारा खमीर बाहर रखना है।

- **वचन 8:**

इसलिये आओ, हम उत्सव में आनन्द मनावें, न तो पुराने खमीर से और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सीधाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से।

विश्वासियों के रूप में हम लगातार और निरन्तर अखमीरी रोटी के पर्व में जीवन बिताते हैं। अर्थात हमें घृणा और दुष्टता के हर प्रकार के खमीर को अपने जीवन से बाहर रखना है, और निष्कपटता, सच्चाई और पवित्रता को बनाए रखना है—यही सब कुछ अखमीरी रोटी द्वारा दर्शाया जाता है।

जानबूझकर पाप में रहने वालों के साथ व्यवहार (5:9-13)

9 मैं ने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है कि व्यभिचारियों की संगति न करना।
10 यह नहीं कि तुम बिलकुल इस जगत के व्यभिचारियों, या लोभियों, या अन्धेर करनेवालों, या मूर्तिपूजकों की संगति न करो; क्योंकि इस दशा में तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता।
11 पर मेरा कहना यह है कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्तिपूजक, या गाली देनेवाला, या पियक्कड़, या अन्धेर करनेवाला हो, तो उसकी संगति मत करना; वरन् ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना।
12 क्योंकि मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतरवालों का न्याय नहीं करते?
13 परन्तु बाहरवालों का न्याय परमेश्वर करता है। इसलिये उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो।

- **वचन 9:**

मैं ने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है कि व्यभिचारियों की संगति न करना।

यहाँ पौलुस उस पहले पत्र की ओर संकेत कर रहा है, जो उसने कुरिन्थियों की कलीसिया को लिखा था। उस पत्र का कोई लिखित अभिलेख हमारे पास उपलब्ध नहीं है।

"संगति करना"—यूनानी शब्द '*sunanamignumi*' '*सुननामिगनुमि*'—जिसका अर्थ है: आपस में घुलना-मिलना, साथ रहना, निकटता रखना, घनिष्ठ सम्बन्ध रखना।

पौलुस हमें चेतावनी देता है कि हम व्यभिचारियों के साथ घनिष्ठ संगति न रखें। बाद में 1 कुरिन्थियों 15:33 में पौलुस लिखता है: *धोखा न खाना, "बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।"*

- **वचन 10–13:**

यदि कोई सह-विश्वासी लगातार, विद्रोही और बिना मन फिराव किए हुए पाप में जीवन बिताता है, तो पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि हम ऐसे व्यक्ति के साथ संगति न करें। हम यह भी समझते हैं कि यह सूची केवल उन्हीं पापों तक सीमित नहीं है, जिनका उल्लेख पौलुस यहाँ करता है—जैसे कि व्यभिचारी, लोभी (लालची), मूर्तिपूजक, निन्दक (दूसरों को गाली देने वाला, शाप देने वाला, बदनाम करने वाला), पियक्कड़, अन्धेर करने वाला (धोखा देने वाला, ठग, चोर)—बल्कि इसमें इसी प्रकार के अन्य पाप भी सम्मिलित हैं (गलातियों 5:22 के सन्दर्भ में)।

यहाँ फिर से हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हम ऐसे लोगों के साथ क्यों और कैसे व्यवहार करें। संभव है कि पौलुस ने 2 थिस्सलुनीकियों 3:14–15 में जो लिखा है, वह इसे स्पष्ट करने में हमारी सहायता करे:

2 थिस्सलुनीकियों 3:14,15
14 यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने तो उस पर दृष्टि रखो, और उसकी संगति न करो, जिससे वह लज्जित हो।
15 तौभी उसे बैरी मत समझो, पर भाई जानकर चिताओ।

हमारा उद्देश्य है उसे उसकी गलती का बोध कराना, और उसे पाप से फिरने में सहायता देना, ताकि वह पुनःस्थापित हो सके।

अनुग्रह के विषय में क्या?

प्रेरित पौलुस वही है जो अपनी अनेक पत्रियों में हमें परमेश्वर के भरपूर अनुग्रह का प्रकाशन देता है। परन्तु जब पाप से निपटने की बात आती है, तो पौलुस दृढ़ रहता है।

क्या हम प्रेम, अनुग्रह और खुले विचारों के नाम पर पाप के प्रति सहनशील हो सकते हैं? नहीं! प्रेरित पौलुस हमें स्पष्ट रूप से दिखाता है कि पाप को संबोधित करना और उससे निपटना आवश्यक है। स्थानीय कलीसिया को पाप के विषय को गंभीरता से लेना चाहिए और उसके प्रति "आँख मूँदकर" नहीं रहना चाहिए।

प्रश्न: यदि कोई व्यक्ति यौन पाप में जीवन व्यतीत कर रहा है (व्यभिचार, समलैंगिकता, यौन व्यापार जैसे—वेश्यावृत्ति, आदि), तो स्थानीय कलीसिया ऐसे व्यक्ति के साथ कैसे कार्य करे?
उत्तर: यद्यपि हम व्यक्ति से प्रेम करते हैं, परन्तु पाप को पाप ही कहते हैं। यदि ऐसा व्यक्ति स्थानीय कलीसिया का भाग बनना चाहता है और विश्वासियों की संगति में रहना चाहता है, तो उसे परमेश्वर के वचन के अधीन होना होगा, और अपने जीवन से पाप को निकालने के लिए सहायता लेने के लिए तैयार होना होगा। हम उनके साथ धैर्यपूर्वक कार्य करते हैं, जब तक वे मन फिराने वाले हों और यह इच्छा रखते हों कि परमेश्वर उनके जीवन से पाप को दूर करे। परन्तु यदि वे स्थानीय कलीसिया का भाग और

विश्वासियों की संगति में रहना तो चाहते हैं, पर परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा के कार्य के अधीन होने को तैयार नहीं हैं, ताकि उनके जीवन से पाप दूर किया जा सके, तो हम उन्हें लगातार संगति में नहीं आने दे सकते।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार, 15 सितम्बर 2019
1 कुरिन्थियों अध्याय 4 और 5

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *1 कुरिन्थियों अध्याय 4 और 5*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1) *"सेवक" और "भण्डारी (steward)" होने पर मनन करें—उन बातों के लिए जिन्हें यीशु ने आपको सौंपा है। आप प्रभु के एक विश्वासयोग्य सेवक और भण्डारी के रूप में अपने दैनिक जीवन को कैसे जीएँगे?*

2) *प्रभु हमें हमारे हृदय की प्रेरणाओं के अनुसार न्याय करेगा। यह दृष्टिकोण/मनःस्थिति हमारे जीवन और सेवकाई में हमारे कार्य करने के तरीके को कैसे बदलती है?*

3) *मसीह का सेवक होना, दूसरों को समृद्ध और दृढ़ करने के लिए बलिदान का जीवन है। कौन-सी बातें हमें आत्म-केंद्रितता से निकालकर दूसरों को समृद्ध और सुदृढ़ करने के लिए बलिदान के स्थान पर ले जाएँगी?*

4) *आप अन्य नए विश्वासियों के प्रति—विशेषकर जिन्हें आप मसीह तक ले आते हैं या जो आत्मिक पोषण के लिए आपसे जुड़ते हैं—एक सच्चे आत्मिक पिता/माता का हृदय कैसे विकसित कर सकते हैं?*

5) *यदि कुरिन्थुस की कलीसिया ने अध्याय 5 में पौलुस के निर्देश के अनुसार उस व्यक्ति से, जो यौन पाप में जीवन व्यतीत कर रहा था, निपटने के लिए कोई कदम न उठाया होता, तो स्थानीय कलीसिया के साथ क्या होता?*

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1) *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2) *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3) *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।

यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org